International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-01-2019; Accepted: 24-02-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 79-81

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि–पर्यटन की भूमिका

प्रमोद कुमार सिंह[1], के० एस० नेताम[2]

[1] पर्यटन प्रबंधन विभाग, संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] भूगोल विभाग, संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और पर्यटन सम्मिलित रूप से दोनों ऐसे क्षेत्र हैं जिनसे सबसे अधिक रोजगार प्राप्त होता है। इस संदर्भ में जैविक खेती और उससे जुड़े उत्पाद अधिक कारगर है। भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है जो कृषि पर निर्भर है। भारत में 9 करोड़ से अधिक किसान यहाँ के 6 लाख गांवों में निवास करते हैं जो प्रति वर्ष 27 करोड़ टन से अधिक खाद्यान्न का उत्पादन करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ बागवनी उत्पाद, फल–फूल, डेयरी उत्पाद, पशुधन उत्पाद तथा पोल्ट्री व मछली इत्यादि उत्पाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से उत्पादित किया जाता है। उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि भारत का 'एग्रीकल्चर' ही यहाँ का 'कल्चर' है। कृषि–पर्यटन किसानों और गांव के लोगों के अतिरिक्त आय के साधन के रूप में विकसित हुआ है। कम उपज प्राप्त होने की स्थिति में कृषि–पर्यटन द्वारा जहाँ किसानों के आमदनी के स्रोत बढ़ते हैं वहीं पर्यटन की इस क्रिया से किसान अत्मनिर्भर भी होते हैं। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की रूचि यहाँ के गांवों का जीवन और कृषि पर निर्भर लोगों को जानने व समझने में अधिक है। प्रस्तुत शोध आलेख में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि क्षेत्र में कृषि–पर्यटन की संभावनाओं की सामयिक समीक्षा की गयी है।

मूल शब्द : कृषि–पर्यटन, किसान, कृषि–व्यवसाय एवं अर्थव्यवस्था।

1. प्रस्तावना

कृषि–पर्यटन का आगाज 1980 में यूरोप के इटली नामक देश में पहली बार हुआ। यहीं से इसको 'एग्री टूरिज्म' का नाम दिया गया। वर्तमान समय में विश्व के अमेरिका, आस्ट्रेलिया, स्पेन, पोलैण्ड, नार्वे, बेलारूस, श्रीलंका इत्यादि देशों में कृषि–पर्यटन काफी लोकप्रिय हो चुका है (ब्राउन व अन्य 2004)[4]। इन देशों द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में कृषक कृषि–पर्यटन में सहायक हुए हैं। वस्तुतः इन देशों में कृषि–पर्यटन के सक्रिय विकास के लिए यहाँ का सामाजिक और आर्थिक कारक पूर्णतः जिम्मेदार हैं। कृषक समुदाय के लिए कृषि–पर्यटन अतिरिक्त आय का साधन बन गया है (आसानाथ (2016)[1]। पर्यटकों के समक्ष खेती–किसानी से जुड़ी गतिविधियों की प्राचीन विरासत को मनोरंजन तरीके से प्रस्तुत करना ही कृषि–पर्यटन है (तावरे 2010)[10]। पूर्णतः शहरी हो चुके लोग अब अपने परिवार के सदस्यों सहित ग्रामीण जन–जीवन को नजदीक से देखना पसंद करते हैं। पर्यटकों का रूझान खेती और खाने की वस्तुओं से जुड़ा होता है (बहल 2012)[3]। खेतों से सीधे खाने की मेज तक (फार्म टू डायनिंग टेबल) जो वस्तुएँ परोसी जाती है, उसका लुत्फ पर्यटकों द्वारा बड़े शौक से उठाया जाता है (दुबे 2017)[5]। फूड सप्लाई के स्रोत अर्थात खेत और उनसे उत्पादित अनाज के पैदा होने की संम्पूर्ण प्रक्रिया को नजदीक से देखने और जानने की इच्छा से ही विश्व में कृषि–पर्यटन को बढ़ावा मिला है (उपाध्याय 2015)[17ण] कृषि–पर्यटन के क्षेत्र में भारत का कृषि राज्य पंजाब की स्थिति अन्य राज्यों की तुलना सुदृढ़ है। यहाँ पर स्थित किसानो के फार्म हाउस ने कृषि पर्यटन को बढ़ावा दिया है। कृषि पर्यटन के विकास ने राज्य के किसानों को अतिरिक्त आय के स्रोत बनाने में सहायक रहा है (पाण्डे 2015)[11ण]

2. साहित्य सर्वेक्षण

कुम्भार, विजय (2013)[10], *'कृषि–पर्यटन : किसानों के लिए नगदी फसल महाराष्ट्र (भारत)'* की रिपोर्ट में कृषि पर्यटन के मूल तथ्यों और कृषि पर्यटन के विकास के कारणों के बारे में विस्तृत व्याख्या की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने रिपोर्ट में पारंम्परिक और कृषि पर्यटन की तुलना भी की है। कुंभार (2009)[9] ने *'कृषि पर्यटन : महाराष्ट्र में किसानों के लिए अवसर'* लेख में महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन विकास हेतु लाभ व क्षमता के बारे में स्पष्ट किया है। इसके साथ–साथ लेख में उन्होंने कृषि पर्यटन और उससे संबंधित समस्याओं के समाधान के बारे में सुझाव भी दिया है। हैसलर, निकोल एवं डोर्टे कसूस्के (2011)[6] ने भारतीय कृषि पर्यटन के लिए *'जड़ों की ओर वापस आये'* जैसे शब्दों का उपयोग कर कृषि के लिए नवाचार व उसे पर्यटन के लिए तैयार किये जाने हेतु सुझाव दिया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सतत् विकास के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। कृषि पर्यटन के विकास के लिए लाभ, बाधाओं और सफल कारको को सम्मिलित किया जाना चाहिए, क्योंकि आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर लोगों की संख्या अत्याधिक है। कृषि पर्यटन के विकास में तावरे, पान्डुरंग (2006)[15] द्वारा लिखित और भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा प्रकाशित लेख *'कृषि के बुनियादी सिद्धान्तों के अंतर्गत पर्यटन की स्थिति में कृषि पर्यटन'* के क्षेत्र को उसके विभिन्न तत्वों के साथ विश्लेषित किया है। अजीमी हमज़ा (2012)[2] ने *'पेनिन्सुलर मलेशिया में रहने वाले देसा वावासन निलायन समुदाय पर कृषि पर्यटन गतिविधियों का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव एवं क्षमता वर्धन'* के संबंध में स्पष्ट किया है कि मलेशिया में मछली पकड़ने वाले देसा वावासन निलायन समुदाय के लोग प्रगतिशील है, ये लोग सामाजिक–आर्थिक लाभ की ओर अग्रसर हैं, कृषि पर्यटन इनमें सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन लाने हेतु उत्तरदायी है।

3. सामग्री एवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध आलेख में द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया गया है। द्वितीय सामग्री के अन्तर्गत कृषि–पर्यटन के क्षेत्र में कार्य करने वाले राज्यों की पर्यटन नीतियों को उपयोग किया गया है साथ ही कृषि–पर्यटन क्षेत्र तथा बड़े–बड़े कृषि फार्म हाउस द्वारा

कृषि–पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु किये गये कार्यो की समीक्षा व संभावनाओं इत्यादि को अध्ययन हेतु विषय सामग्री के रूप में उपयोग कर निष्कर्ष ज्ञापित किया गया है।

4. भारत में कृषि पर्यटन का विकास

भारत में कृषि–पर्यटन की शुरूआत 2004 में हुई। देश में कृषि–पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश राज्यों ने अपने यहाँ की पर्यटन नीति में समायोजित किया है। यहीं से देश में कृषि पर्यटन को बढ़ावा मिला, जो वर्तमान में देश के कई राज्यों में फूलने–फलने लगा। भारत में कृषि–पर्यटन के जनक पान्डुरंग तावरे को माना जाता है। तावरे ने 'एग्री टूरिज्म डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन' (ए.टी.डी.सी.) नामक संस्था का गठन 2005 में किया। इसके गठन के बाद कृषि पर्यटन को भारत में नया आयाम प्राप्त हुआ कृषि–पर्यटन की बढ़ती लोकप्रियता के कारण विश्व में प्रति वर्ष 16 मई को 'विश्व कृषि–पर्यटन दिवस' बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। 'एग्री टूरिज्म डेवलपमेण्ट कार्पोरेशन' (ए.टी.डी.सी.) के अनुसार इस तरह के पर्यटन से अभी तक जितने भी किसान जुड़े है उनकी आय में 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। विभिन्न राज्यों ने 2017 में कृषि–पर्यटन नीति घोषित कर इसमें नये प्रावधन जोड़े गये हैं (सिंह 2016)[13]। महाराष्ट्र राज्य में कुल 152 स्थानों पर कृषि–पर्यटन से कृषक जुड़े हैं। इस कार्य के लिए ए.टी.डी.सी. ने 500 कृषकों को अब तक प्रशिक्षण प्रदान कर चुका है। ये किसान कृषि क्षेत्र में आने वाले कृषि पर्यटकों के लिए कृषि पर्यटन गाइड की तरह कार्य करते हैं। अर्थात ये कृषक सैलानियों को खेती और उससे जुड़ी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हैं। कृषि–पर्यटन को और अधिक सफल बनाने हेतु ए.टी.डी.सी. ने पर्यटकों के रूचि के अनुसार यात्रा कार्यक्रमों का नियोजन भी करते हैं। इस प्रकार के पर्यटन के लिए पर्यटको से शुल्क भी लिया जाता है (तावरे 2006)[15]। उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि देश में कृषि पर्यटन के विकास में कृषक व कृषि संरचना की अहम् भूमिका है, स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि–पर्यटन का योगदान बढ़ा है।

5. कृषि–पर्यटन के अन्तर्गत संबंद्ध क्षेत्र

कृषि–पर्यटन पर्यटन उद्योग के आधार को विस्तृत करता है। कृषि–पर्यटन में भोजन, आवास, मनोरंजन और यात्रा की कम लागत है। इस प्रकार के पर्यटन की लागत एवं प्रभावशीलता पर्यटन के दायरे को समृद्ध बनाती है। कृषि–पर्यटन के अन्तर्गत संबंद्ध क्षेत्र (शर्मा एवं व्यास 2014)[12]

5.1 कृषि उद्योग और जीवन–शैली

गांवों से जुड़ी शहरी आबादी की जिज्ञासा हमेशा लकड़ी, हस्तशिल्प, भाषा–बोली, संस्कृति, परम्परा, कपड़े और ग्रामीणों की तरह भोजन के स्रोत, पौधे, पशु–पालन तथा कच्चे माल के बारे में जानने की होती है। अतः कृषि–पर्यटन किसान, गांव और कृषि के चारों ओर घूमता है, यह पर्यटकों को इस क्षेत्र की जिज्ञासाओं को पूरा करने की क्षमता रखता है।

5.2 मनोरंजन गतिविधियों की मांग और आपूर्ति

कृषि–पर्यटन में गांव के सभी आयु समूहों के साथ–साथ घरेलू व विदेशी पर्यटकों को मनोरंजन के अवसर प्रदान करता है। स्थानीय लोक संस्कृति, लोक उत्सव, लोक नृत्यों इत्यादि का आयोजन कर रात्रि में ठहरने वाले पर्यटकों को मनोरंजन सुविधाएँ प्रदान करते हैं। वस्तुतः यह क्षेत्र में सस्ते मूल्य पर संम्पूर्ण परिवार के लिए ग्रामीण खेती, त्यौहार, भोजन, पोशाक इत्यादि मनोरंजन की विविधता प्रदान करता है।

5.3 प्रकृति से अनुकूलन

व्यस्त शहरी जन–जीवन का झुकाव प्रकृति की ओर रहता है क्योंकि प्राकृतिक वातावरण हमेशा व्यस्त जीवन से दूर रहता है। कृषि–पर्यटन ग्रामीण संरचना और संस्कृति पर रचा–बसा है। इस प्रकार के वातावरण में पशु–पक्षी, मवेशी, फसल, जलाशय इत्यादि का अनुकूलन बना रहता है।

5.4 शान्ति और सुकून का सामूच्चय

आधुनिक जीवन विविधीकृत सोच और विविध गतिविधियों का एक उत्पाद है। आधुनिक जीवन–शैली व आराम का आनन्द लेने के लिए और अधिक पैशा कमाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अलग–अलग तरीकों व दिशाओं में अधिक कार्य करने का प्रयास करता है। इसलिए शान्ति और सुकून हमेशा व्यक्ति के 'सिस्टम' से बाहर है। कृषि–पर्यटन में शान्ति व सुकून अंतर्निहित होता है, क्योंकि यह शहरी क्षेत्र से दूर और प्रकृति के करीब है।

5.5 कृषि–पर्यटन स्थल की विविधता

कृषि महत्व के स्थान यथा– उच्चतम फसल/उपज खेती, उत्तम पशु उपज/कृषि, प्रसंस्करण इकाईयाँ पर्यटकों के आकर्षण को जोड़ने का कार्य करती हैं। सड़क के किनारे लहलहती फसल, कृषि के उत्पादों का प्रसंस्करण, रात्रि निवास व सुबह का नास्ता, भारी बारिस जैसे स्थान और परिस्थितियाँ कृषि–पर्यटन की गतिविधियों में सम्मिलित होती हैं। प्रगतिशील किसानों द्वारा ऐसे स्थानों में पर्यटकों को एक विशेष कौशल सिखाने के लिए जहाँ उपयुक्त हैं वहीं ऐसे क्षेत्र कृषि विषयों पर कार्यशाला व जड़ी–बूटियों की दिलचस्प जानकारी देने वाले स्थल के रूप में जाने जाते हैं।

6. कृषि–पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटकों का आगमन

भारत में कृषि–पर्यटन का विकास महाराष्ट्र, हरियाड़ा, हिमचाल प्रदेश, कर्नाटक तथा पंजाब इत्यादि राज्यों में बड़े स्तर पर किया जा रहा है। इन राज्यों में विकसित कृषि–पर्यटन केन्द्र पर्यटकों को खूब लुभा रहे हैं (बहल 2012 एवं कुमार व अन्य 2016)[3,8]। पर्यटक कृषि–पर्यटन केन्द्र में रहकर खेत–खलिहान और खेती–किसानी के बारे में करीब से जानकारी लेते हैं (जगताप व अन्य)[7] इन राज्यों के कृषि–पर्यटन केन्द्रों में 2017–18 में 20 लाख 68 हजार पर्यटकों का आगमन हुआ है। इसके माध्यम से किसानों को 30 करोड़ 43 लाख रूपये की आमदनी हुई है। इन राज्यों के कृषि–पर्यटन केन्द्रों में 40 प्रतिशत पर्यटक अपने परिवार के साथ रूके वहीं कार्पोरेट क्षेत्र से 20 प्रतिशत, शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े 30 प्रतिशत पर्यटकों का आगमन हुआ है, जबकि त्यौहारों को मनाने के लिए 10 प्रतिशत लोग आये। कृषि–पर्यटन केन्द्रों से जुड़े 20 से 30 प्रतिशत लोग स्थानीय और महिला बचत समूहों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

7. निष्कर्ष और सुझाव

भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है एवं उनका जीवन–यापन खेती पर आधारित है। बढ़ती जनसंख्या, आधुनिक जीवन–शैली एवं खान–पान को देखते हुए यह आवश्यक है कि वे कृषि के साथ अन्य रोजगार अपनाएँ ताकि जीवन–यापन सुदृढ़ हो सके। भारत में कृषि एक व्यवसाय से ज्यादा एक संस्कृति है। पर्यटन भारत देश का प्रमुख उद्योग एवं आय का स्रोत है। इस उद्योग को कृषि व्यवसाय के साथ जोड़े दिया जाय तो कृषि–पर्यटन किसानों के लिए एक अतिरिक्त आय का साधन हो सकता है। कृषि–पर्यटन से किसान, ग्रामीण समुदाय और टूर आपरेटर इत्यादि सभी सम्मिलित रूप से लाभान्वित होते हैं। किसानों को अपनी खेतीबाड़ी के दायरे को

बढ़ाने के साथ–साथ व्यवसायिक बन कर समेकित और आधुनिक खेती करनी चाहिए। कृषि आय में वृद्धि को बनाए रखने के लिए इसमें नए निवेश की जरूरत होती है। स्थानीय कृषि उपज के प्रति लोगों में जागरूकता भी बढ़ती है। कृषि से जड़ी अन्य करोबारी गतिविधियाँ भी बढ़ती हैं। पर्यटको को खेती के साथ–साथ उसमें जुड़े विभिन्न उद्यमों में रूचि बढ़ती है। स्थानीय कला, संस्कृति व हस्तशिल्प की मांग बढ़ने से स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। पर्यावरण के प्रति जागरूक होते समाज और कम लागत के चलते कृषि–पर्यटन की अवधारणा पूरे भारत में तेजी से लोकप्रिय हुई है। पिछले 5–6 वर्षो से विदेशी और देशी पर्यटकों का कृषि–पर्यटन के प्रति रूझान बढ़ा है। भविष्य में कृषि–पर्यटन का क्षेत्र व्यापाक आकार लेगा। प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर प्रस्तुत शोध आलेख द्वारा कृषि–पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित सुझाव ज्ञापित है–

- कृषि–पर्यटन द्वारा गरीबी उन्मूलन और सतत् मानव संसाधन विकास को बढ़ाया जाना चाहिए, जिससे युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार प्राप्त हो सके।
- कृषि–पर्यटन की अधोसंरचना व बुनियादी सुविधाएँ बढ़ाई जानी चाहिए, जिससे पर्यटकों को ठहरने व मनोरंजन की सुविधाएँ प्राप्त हो सके।
- कृषि–पर्यटन के क्षेत्र में प्राकृतिक चिकित्सा क्षेत्र आयुर्वेद को जोड़ा जाना चाहिए, जिससे स्वदेशी चिकित्सा व जड़ी–बूटी का ज्ञान लोगों को मिल सके।
- कृषि–पर्यटन को विविध रूप से विकसित व प्रोत्साहित करने हेतु कृषकों को सब्सिडी आधारित कृषि योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाना चाहिए जिससे 'ऑफ सीजन' में भी पर्यटक गतिविधियाँ कृषि–पर्यटन क्षेत्र में बनी रहे।
- कृषि–पर्यटन को बढ़ावा देने में टूर आपरेटर को सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे इनके टूर कार्यक्रम में कृषि–पर्यटन पर्यटन स्थल जुड़े रहे।

कृषि–पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ग्रामीण कृषि में पर्यटको की संख्या के साथ लोगों के बीच व्यापार का स्तर बढ़ने से उनके आय के स्तर में बढ़ोत्तरी होती है, साथ ही किसानों का जीवन स्तर भी सुधरता है। अतः भारत में कृषि–पर्यटन ग्रामीण जीवन–शैली व असुरक्षा की भावना को दूर कर 'जननी जन्म भूमिस्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना को बढ़ायेगा ऐसा विश्वास है।

8. References

1. Ahsanath MK. Potentials of Agro-tourism in Karnataka, International Conference on Research avenues in Social Science. 2016; l(3):22-26.
2. Azmimi Hamzah. Socioeconomic Impact potential of agro tourism activities on *Desa Sawasan Nelayan Community* living in Peninsular Malaysia, African Journal of Agricultural research. 2012; 7:932.
3. Bahl, Sarita. Strategic implications in agro-tourism with special reference to Punjab, International Journal of Research in Commerce & Management. 2012; 3(12):81-84.
4. Brown Dennis M, Reeder Richard J. Agri-tourism offers opportunities for farm operators' U.S.A, 2004, 12-15.
5. Dubey, Arvind Kumar. Developing Rural Tourism Resources in India, Kurukshetra. 2017; 66 (2):39-43.
6. Hausler, Nicole, Doret Kasuske. Back to the Roots: Agri-tourism In India, International Cases in Sustainable Travel & Tourism, 2011, 135-137.
7. Jagtap MD, Nichit MB, Benke SR. Agro-tourism: The performance, problems and prospects for the farmers in Maharastra, International Journal of Commerce and Business Management. 2010; (3)1:153-156.
8. Kumar M, Ramana Dubey K. Agri-Tourism as an Alternative Source of Earning Income for Farmers in the State of Maharashtra. Udgam Vigyati – The Origin of Knowledge. 2016; 3:1-11.
9. Kumbhar Vijay M. Agro-Tourism: Scope and Opportunities for the Farmers in Maharashtra, Researchgat, 2009, 1-11.
10. Kumbhar Vijay M. Agro-Tourism: A Cash Crop for Farmers in Maharashtra (India), Researchgat, 2013, 1-13.
11. Pandey A, Lakhawat PS. Farm Tourism in Punjab- A Case Study on the Concept and Its Sustainability, International Journal of Social Science and Humanities Research. 2015; 3(2):71-75.
12. Sharma Swati, Vyas Divya. Agro tourism: Imminent sunrise sector for Rural development, SAMZODHANA – Journal of Management Research. 2014; 2(1):235-245.
13. Singh Priyanka. Identifying the potential of Agri-tourism in India Overriding Challenges and Recommend Strategies, International Journal of Core Engineering & Management. 2016; 3(3):1-14.
14. Taware Pandurang. Agri Tourism New Revenue Stream for Farmers thru Rural-Urban Reunion. Financing Agriculture. 2009; 42(5):20-21.
15. Taware Pandurang. Agri–tourism: innovative supplementary income generating activity for enterprising farmers Agri-Tourism-Development-Corporation, ATDC, 2006.
16. Taware Pandurang. Agro-Tourism: Innovative Income Generating activity for enterprising farmers, ATDC, Pune, 2010.
17. Upadhye J. Problems of Agro Tourism Industry in Maharashtra: A Study. International Journal of English Language, Literature and Humanities. 2015; 3(1):478-488.